**इकाई 4: देश-परदेश**

# पाठ 11. कलिंग विजय

## पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ की पृष्ठभूमि ऐतिहासिक है। इस पाठ का उद्देश्य बच्चों को यह समझाना है कि हिंसा से कोई काम पूर्ण नहीं होता।

## पाठ का सारांश

कलिंग युद्ध में नरसंहार करने के बाद सम्राट अशोक रेखा के साथ राजमहल में प्रवेश करते हैं। कलिंग की राजकुमारी गायिका के वेश में पहले से ही वहाँ उपस्थित है। सम्राट अशोक को गीत सुनाते समय गायिका उनके सामने आ जाती है। गायिका सम्राट अशोक को कलिंग युद्ध के भीषण परिणाम के बारे में बताती है। वह सम्राट अशोक को इस युद्ध का ज़िम्मेदार ठहराती है और कहती है कि सम्राट आप अकेले हैं तथा कोई आपसे प्रेम नहीं करता। रेखा इस बात पर गायिका को डाँटती है तथा उन दोनों की बहस होती है। गायिका की बातें सुनकर धीरे-धीरे सम्राट अशोक का हृदय पिघल जाता है। गायिका सम्राट अशोक को अपना भाई बना लेती है। अंत में सम्राट अशोक अहिंसा का मार्ग चुन लेते हैं तथा बौद्ध धर्म स्वीकार कर लेते हैं।

## अध्यापन संकेत

नाटक को पढ़ाने से पहले **पठन-पूर्व चर्चा** में दिए गए प्रश्न बच्चों से पूछें। उन्हें सम्राट अशोक तथा कलिंग युद्ध के बारे में बताएँ। पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों को पाठ से मिलने वाली सीख दें। पाठ में निहित जीवन-मूल्यों को बच्चों में विकसित करें।

**पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें–**

- बच्चों को बताएँ कि वर्तमान में कलिंग का नाम बदलकर ओडिशा हो गया है।
- बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में सम्राट अशोक ने अहम भूमिका निभाई। इस बारे में बताएँ।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।